%%A. D. 1190‒1436

%%Ś. 1112‒1358

%%( From 1184—19-9-1264 A. D.)

%%p. 144

No. 096

Kūrmeśvara Temple at Śrikūrmaṃ<\*>

( S. I. I. Vol. V, No. 1188; A. R. No. 307 of 1896;

I. M. P. Vol. I. P. 688, No. 185; Noticed by

M. M. Chakravarti in J. A. S. B. 1903, No. 2, B, 120 )

Ś. 1172

S & T

(१।) स्वस्ति ॐ नमो नारायणाय [।।] उत्तु गो गग्गवंशोस्ति प्रशसाभू-

(२।) मिरुज्वलः ।। या करो यो महीपालरत्नानां गुणशालिनां [।।] अन-

(३।) ंग्गभीमभूपाल[ः] तत्रासीत्तेजसा रविः । किञ्चा सी शीतलो

नित्यं सुहृ-

(४।) दां सुधियामपि । वीरश्रीनरसिंह्यदेवनृपति र्भूपालचूडा-

(५।) मणिस्तस्मादाविरभूच्चिराविगुणसद्रत्नौघरत्नाकरः । नास्मिन् वि-

(६।) ह्वलता जलालिरपिनो नो दुष्टसत्वोत्करो गाम्भीर्य्य त्तु ततो-

(७।) धिकं जलधिजाप्यास्ते विना मंथनात् । देहू साहसमल्ल वीरतिल-

(८।) कस्सामन्तचूडामणि स्तस्यासीद्गुणरत्न रोहणगिरिश्चिल्लस्य

(९।) गोत्रोद्भवः । श्रीसंत्तेश्वरनायकादुदभव त्रैलोक्यदेव्या-

(१०।) मसौ चित्रं तच्चरितं मनांसि हरते भूयस्तथाप्यु-

(११।) ज्वलं ।। शकवषं(र्ष) वुलु ११७२ ने[टि] मकर शुक्ल १३ यु

सोमवा-

<\* On the fourteenth pillar in the Tirchuttu-manḍapa of this temple.>

%%p. 145

(१२।) रमुन<\*> प्रतापवीर श्रीनरसिंह्यदेवर श्रीमुजवर्द्धनगा श्रीकू-

(१३।) म्म(र्म्म)स्वामिदेवरकु दक्षिणदेशाधिकार वड्डकुव(म)र देउसाह-

(१४।) समल्लंडु वेट्टिन गंडमाडलु नूट मूडु

(१५।) तन व्रित्तियैन सालिवेंडननिच्चिनं पुटलु मुप्पइंटि

(१६।) लेक्क कोल्पु रसंलु तोंव्भइटिकि ई कोल्पुरि पोलिकडकु नित्यमुं

(१७।) रेपटि पूजानंत्तरम वीरश्रीनरसिंह्यदेवर अवसर-

(१८।) भुन अरगिच्चडि मडविडलु पदि ई मडपडलुकुं वेट्टिन क-

(१९।) ंच्चुतल्य १ एड गंडकोलविस्यलु २ ण्टि लेक्कं वेट्टिन तल्यलु

पदि ईंचट्ट

(२०।) मु ओक्क[ण्टि] पलमुलु पदि तंच[रू]रि ओकडुनु अखंडदीप-

(२१।) मुलु रे[ण्टि]कि वेट्टिन मोदालु एंभयुनु ई मडपडलपै

(२२।) नेइ पेरुवुनकु मोदलु पदियु वीरश्रीनरसिह्यदेव संप्र-

(२३।) दायमु सानुलु मुप्पण्ड्रुनु मद्य(द्द)लकांड्रु आऋवुरुन् न-

(२४।) ट्टुवु ओकरुडु मोखरि आवाजकांडु करडकांडु कहलका-

(२५।) ंडु मेलिनायकुंगा संप्रदायमुनकु माडल् पो

(२६।) लिभोगमु गोनि आचंद्रार्क्कमु गोल्वंगलारु ई संप्रदाय-

(२७।) मु अरसि कोल्पिच्चेडु ओऋंगाविल्लिदासनायकुनिकि

तन व्रि-

(२८।) त्तियैन सालिवेंडानयंदु सूर्न्नमडलमुन पुट्य डु

(२९।) भूमियु इंदुल तन तोंटलो नन्नृऋपोंक्क चेटलुतोडि-

(३०।) तोंटप[ट्टु]नु धारापूर्वकमु सेसि आचंद्रार्क्कंमु चेव्लुन-

(३१।) ट्टु गानिच्चे ई साहसमल्लंडु तन सेसिन ई धम्म(र्म्म)-

वुलु निर्म्मत्स-

<\* The date is not regular. But, it may be taken as A. D. 1250. Chakravarti gives the corresponding date as the 6th February, 1251 A. D. But, that date fell in Kumbha, while the month recorded in the inscription is Makara.>

%%p. 146

(३२।) य्य(र्य्य)मुनं वेल्लुनट्टु गा ई तिरुपति श्रीवैष्णवुल अन(नु)भविच्चि-

(३३।) वारिकि कट्टंवेट्टि ई अरगिंच्चिन प्रसादतल्यलु पदिंट्टिलो ई श्रीवै-

(३४।) ष्णवशाशनिकुलकु एनु तल्यलुनु स्वस्तैन व्राह्म[णु]लकु

एनु तल्य-

(३५।) लुनु ई व्राह्म[णु]लकु षड्डिंच्चेडु परिचारकुनिकि

मू डु कुंञ्चा-

(३६।) लुगां चेल्लंगलदि ई मोदलि माडलकु र डादिपोलिमाड-

(३७।) लु एव्व ईयोकंडुमाडलकु जेसिन व्यवस्था [।।] पूजा-

(३८।) र्त्थमै तिरुमल्यनमुनकु चंदनमु लुष्पालु धूपद्र-

(३९।) व्य दीपमुनकु मडपड्लपै कररिअमदुनकु विड्यालरेंडु

(४०।) अप्पालु पदि इंटिकिगा एंडादिकि नालुवु माडयु

(४१।) एडु चिन्नालु पादिकयु ई संप्रदायमु नट्ट वुनिकि जो-

(४२।) तमु एंडादिकि नालुवु माडलु एन्मिदि चिन्नालुनु नित्यना-

(४३।) लुवुकुंञ्चालु कूडुनु तमलमोक्कंडुनु नेलकु नालु-

(४४।) वु अप्पालुनु माखरिकि जातमु माडलु मूडुनु नित्य-

(४५।) रेंड्डु कुंञ्चालु अड्ड कूडुनु तमलमोकंडुनु नेलकु अ-

(४६।) पालु नाल्वुनु मद्य(र्द्द)लकांड्रु आरुवुरुनु अवुजकांडु

(४७।) करडकांडु कहलकांडु {करडकांडु} मलिनायकुंगा

(४८।) पदुड्रकु पेरु ओक्कण्ट नित्य रेंडु कुंञ्चालु कूडनु अर्द्ध

(४९।) तमलमुनु नेलकुनु अप्पालु मूडुनु ए डादि जीतकोल्चु नल्ब-

(५०।) इ रेंडु पुट्लु ई संप्रदायमु कलु(लि)ग्गमण्डल-नाय-

(५१।) कु कूंत्तुलु मुप्फंड्रकु ई पेरु ओककंट्ट जीतमु कूडु

(५२।) ंगा कोल्चु एंडादिकि कोल्चु पुट्लु नल्फइ रेंडु वीरलकु नित्य

(५३।) रेंडु विड्यलुनु ई पेरु ओक्कण्ट नेलकु अप्पालु मू डुनु-

(५४।) गा ई संप्रदायमुनकु एंडादिकि कोल्चु जीतमुनकुगा पोलि-

(५५।) वल्लं जेल्लिन कोल्चु गर्सलु एंब्भयेनु पुट्लु रेंटिकि पर् र्

ओक्कंट्ट धान्य-

%%p. 147

(५६।) मु पुटिनेंदुमिंट्टि लेक्कनैन ईरवयारु माडलु नालु-

(५७।) वु चिन्नालुनु ई संप्रदायमुनकुं जेल्लेडु अप्पालु वि-

(५८।) ड्यालकुगा एंडादिकि माडलु पदियुनु तल्यलु अविसि-

(५९।) न चिक्कं जेयुटकु माडयुगा सव्वप्रयमुनु मो-

(६०।) दिलि माडल पोलिनि जेलगलयदि [।।] गगवंशनिजामात्या-

(६१।) येन्ने कालिंगभूभुजः [।] तेषां पादयुग नत्वा याचे मे

(६२।) कीत्तिरव्यतां [।।] शत्रुरेव हि शत्रु[ः]स्या धर्म्मशत्रु न(न)कस्य-

चित् । वीर

(६३।) कम्मटा श्रीभंडारमुनं वेट्टिन गडमाडलु नलपं ओ-

(६४।) क्कण्टि पालि ई माडलु इवाइ टिकि ई कृ द्दि व्यवस्थन इर्वड्रु

(६५।) सानुलु ईद्दरु मद्दे(द्द)लका[ं]ड्रकु वीरलताडि च लिविसंपदलु जी-

(६६।) त भुक्तुलु चेल्लनट्टु गां वेट्टिति ।। शत्रुणापि क्रि(कृ)तो धर्म्म पालनी-

(६७।) य[ः] प्रयत्नतः । शत्रुरेव हि शत्रु[ः]स्याः धर्म्मः शत्रुन(नं)कस्य-

चित् [।।]